संवाद

मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। मनुष्य जीवन भर कुछ न कुछ सीखता है और संभवत: सिखाता भी है। जब शिशु इस संसार में आता है तो धीरे-धीरे चलना सीखता है, बोलना सीखता है। हालाँकि बच्चे को यह ज्ञात ही नहीं होता कि वह सीख रहा है, फिर भी उसका सांसारिक ज्ञान बढ़ता चला जाता है। मनुष्य जीवन की सबसे अधिक मधुर तथा सुनहरी अवस्था विद्यार्थी जीवन होता है। विद्यार्थी जीवन ही सारे जीवन की नींव है। इस नींव को मज़बूत बनाने में अभिभावकों के साथ-साथ शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005* के निर्माण के बाद से शिक्षक को अब सुगमकर्ता (फ़ेसीलिटेटर) का स्थान दिया गया है। यह माना गया है कि बच्चे ज्ञान का सृजन स्वयं ही करते हैं। शिक्षक और अभिभावक तो केवल उन्हें वह वातावरण और अवसर उपलब्ध कराते हैं जिसमें ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया सहज होती है।

कक्षा में विविधता होती है। हर बच्चे की अपनी-अपनी आवश्यकता होती है, सबमें सीखने की क्षमता है, सबकी अपनी-अपनी भाषा होती है एवं सीखने का तरीका होता है। ऐसे में शिक्षक के पास चुनौती होती है — सबको साथ लेकर चलने की।

कक्षा ही शिक्षक की वह खूबसूरत प्रयोगशाला है जहाँ सचमुच एक नयी और सुंदर दुनिया तैयार हो सकती है। इसके लिए शिक्षक नित नए प्रयोग करता है और स्वयं भी सीखने-जानने की प्रक्रिया में शामिल होता है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता भी बनी रहती है।

बाल साहित्य बच्चों को सीखने-समझने के विविध अवसर उपलब्ध कराता है। रुचिकर और पढ़ने में आनंद देने वाली कहानियाँ, कविताएँ, नाटक आदि का कक्षा में प्रयोग ज़रूरी है और इनका चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में भाषा एक महत्वपूर्ण आयाम है। अकसर ऐसा होता है कि हम जो भाषा इस्तेमाल करते हैं वह बच्चों के स्तरानुकूल नहीं होती। दुरूह और बोझिल भाषा बच्चों को पढ़ने का आनंद नहीं दे पाती।

बच्चों के बचपन, उनके जीवन में स्पंदन होना आवश्यक है। यह बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक होता है। बच्चे हमसे बहुत कुछ कहना चाहते हैं। ऐसा भी जो उन्हें पसंद आता है और ऐसा भी जो उन्हें पसंद नहीं आता। हम बड़ों में उसे सुनने, गुनने का धैर्य होना चाहिए। इस अंक में शिक्षा से जुड़े लेख, कविता एवं बालमन की अभिव्यक्ति शामिल हैं। आशा है कि पाठकों को यह अंक पसंद आएगा और हमारे बीच विचारों का आदान-प्रदान बना रहेगा।

अकादमिक संपादक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् परिसर में योगाभ्यास करते हुए बच्चे (2016)